SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

संचार साधनमंत्र तंत्र और ध्यान की भूमिका :

अक्षर पी. पटसारिया

शोधार्थी

आलोक अग्रवाल

शोध पर्यवेक्षक एवं संकायाध्यक्ष

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

भारतवर्ष की पावन धरा पर स्थित माँ पीताम्बरा पीठ, दतिया, मध्यप्रदेश का एक ऐसा आध्यात्मिक और तांत्रिक साधना स्थल है, जो न केवल श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है, बल्कि एक अत्यंत उन्नत चेतना-संप्रेषण का जीवंत माध्यम भी है। इस शोध पत्र का उद्देश्य माँ पीताम्बरा पीठ में प्रचलित तीन प्रमुख आध्यात्मिक साधन–मंत्र, तंत्र और ध्यान–की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, जिनके माध्यम से साधक न केवल आत्मबोध प्राप्त करता है, बल्कि व्यापक रूप में मानव कल्याण की दिशा में भी गति करता है।

आध्यात्मिक संचार एक सूक्ष्म और पारलौकिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति और ब्रह्मांडीय चेतना के मध्य सेतु का कार्य करती है। यह संचार केवल शब्दों से नहीं, बल्कि मौन, भावना, ऊर्जा और प्रतीकों के माध्यम से होता है। माँ पीताम्बरा पीठ, इस दृष्टि से, एक ऐसा केन्द्र है जहाँ मौन व्रत, तांत्रिक अनुष्ठान, मंत्रोच्चारण, यंत्र पूजन और ध्यान जैसे माध्यमों से साधक ब्रह्मांडीय ऊर्जा से सीधे जुड़ने का प्रयास करता है।

शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि आध्यात्मिक संचार, यदि सही साधनों–मंत्र, तंत्र और ध्यान–के माध्यम से किया जाए, तो वह न केवल आत्मविकास में सहायक होता है, बल्कि सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी एक स्वस्थ, संतुलित और कल्याणकारी जीवन की नींव रखता है। माँ पीताम्बरा पीठ इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

कुजीभूत शब्द
माँ पीताम्बरा पीठ, आध्यात्मिक संचार, मंत्र, तंत्र, ध्यान, मौन साधना, चेतना, मानव कल्याण, तांत्रिक साधना, पीठ परंपरा।

प्रस्तावना

भारतवर्ष की आध्यात्मिक चेतना ने मानव सभ्यता के प्रारंभिक युगों से ही संचार के ऐसे माध्यमों को विकसित किया है, जो इंद्रियातीत अनुभवों, आत्मसाक्षात्कार और ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संपर्क का सशक्त माध्यम रहे हैं। यह संचार न केवल भाषिक है, न ही केवल विचार-आधारित, बल्कि यह चेतना, ऊर्जा और आत्मा के सूक्ष्म स्तर पर होने वाली उस संवाद प्रक्रिया को रेखांकित करता है, जिसे 'आध्यात्मिक संचार' कहा जाता है। यह संचार जब मंत्रों की ध्वनि, तंत्रों की क्रियात्मकता और ध्यान की मौन अनुभूति से होता है, तब साधक अपने भीतर की ब्रह्म चेतना से जुड़ने लगता है और यही जुड़ाव उसकी आत्मविकास यात्रा की शुरुआत होती है। ऐसे ही आध्यात्मिक अनुभवों और संचार के शक्तिशाली केन्द्र के रूप में मध्यप्रदेश के दतिया जिले में स्थितमाँ पीताम्बरा पीठविशेष महत्त्व रखता है। यह पीठ केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि एक जाग्रत साधना केंद्र है, जहाँ मंत्र, तंत्र और ध्यान के माध्यम से हजारों साधकों ने आत्मिक उत्थान की अनुभूति की है। माँ पीताम्बरा, जिन्हें बगलामुखी के रूप में भी जाना जाता है, दश महाविद्याओं में से एक हैं। उन्हें संहार और संरक्षण की देवी माना जाता है, और उनकी उपासना मुख्यतः तांत्रिक परंपरा में की जाती है।

पीठ की स्थापना 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक महान तांत्रिक, योगी और मौन व्रती संत द्वारा की गई थी जिन्हें श्रद्धालु 'स्वामी जी' के नाम से जानते हैं। स्वामी जी का मौन जीवन, ध्यान-संपृक्त साधना और अत्यंत रहस्यमयी व्यक्तित्व इस पीठ की आत्मा रहे हैं। उनका यह जीवन और साधना पद्धति इस बात का जीवंत प्रमाण है कि जब संचार शब्दों से परे जाकर मौन, ऊर्जा और चेतना से होता है, तब वह न केवल आत्मा का कल्याण करता है, बल्कि समष्टिगत रूप से समाज, राष्ट्र और संपूर्ण मानवता के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध होता है।

मंत्र, तंत्र और ध्यान - ये तीनों न केवल भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के मूल आधार हैं, बल्कि ये अपने आप में एक विशिष्ट संचार पद्धति को भी निरूपित करते हैं।

- मंत्र एक ध्वनि आधारित संचार प्रणाली है, जहाँ बीजाक्षरों, ध्वनि कंपन और उच्चारण की लयात्मकता के माध्यम से साधक अपनी चेतना को ब्रह्मांडीय तरंगों से जोड़ता है।
- तंत्र एक क्रियात्मक प्रणाली है, जो ऊर्जा केंद्रों, यंत्रों, मुद्राओं और अनुष्ठानों के माध्यम से ब्रह्मांडीय शक्तियों के साथ एक सक्रिय संवाद स्थापित करती है।
- ध्यान एक मौन प्रक्रिया है, जिसमें साधक अपने चित्त को अंतर्मुख करता है और आत्मा के साथ साक्षात्कार की ओर अग्रसर होता है।

माँ पीताम्बरा पीठ इन तीनों साधनों का समन्वित उपयोग करके साधक को एक ऐसी साधना-पद्धति प्रदान करता है, जिसमें उसका अंतर्मन बाहय व आंतरिक विश्व से ऊर्जा संवाद करता है। यही संवाद 'आध्यात्मिक संचार' की वास्तविक व्याख्या है।

आज के भौतिकतावादी युग में जब मानवीय संबंध सतही हो गए हैं और आत्मिक शून्यता बढ़ती जा रही है, तब आध्यात्मिक संचार के यह पारंपरिक माध्यम मनुष्य को उसकी मूल चेतना से जोड़ने की सामर्थ्य रखते हैं। यह शोध केवल एक धार्मिक स्थल के साधना पक्ष का वर्णन नहीं है, बल्कि यह उस गूढ़ संवाद प्रक्रिया की पड़ताल है जो मंत्र, तंत्र और ध्यान के माध्यम से चेतना और ऊर्जा के धरातलों पर घटित होती है। माँ पीताम्बरा पीठ इसकी एक जीवंत प्रयोगशाला है, जहाँ प्रतिदिन हजारों साधक इस प्रक्रिया का अनुभव करते हैं।

अतः यह शोध, आध्यात्मिक संचार की परंपरागत विधाओं को आधुनिक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और संचार शास्त्रीय दृष्टिकोण से जोड़ने का प्रयास है। इसमें यह भी देखा गया है कि किस प्रकार ये विधाएँ आज भी मानव कल्याण की दृष्टि से प्रासंगिक हैं और कैसे माँ पीताम्बरा पीठ एक सक्रिय केंद्र बनकर न केवल आस्था, बल्कि ऊर्जा और चेतना के गहन संवाद का माध्यम है।

माँ पीताम्बरा पीठ का संक्षिप्त परिचय

माँ पीताम्बरा पीठ की स्थापना 1935 में श्री स्वामी जी द्वारा की गई थी, जो स्वयं एक मौन साधक थे। यह पीठ दतिया में स्थित है और तांत्रिक उपासना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यहाँ माँ पीताम्बरा के अतिरिक्त बगलामुखी, धूमावती, अन्नपूर्णा, काल भैरव एवं अन्य देवताओं की उपासना भी की जाती है। यह पीठ विशेष रूप से तांत्रिक साधना, मौन व्रत और मंत्रोच्चारण की केंद्रस्थली है।

मंत्र, तंत्र और ध्यान का प्रभाव

पीताम्बरा पीठ की साधना पद्धति इन तीनों तत्वों को एकत्र करती है। साधक पहले मंत्र द्वारा मानसिक लय बनाता है, तंत्र द्वारा संरचना में प्रवेश करता है और ध्यान द्वारा आत्मिक शांति को अनुभव करता है। यह त्रैतीयक प्रणाली संचार और कल्याण दोनों की वाहक बनती है।

शोध के उद्देश्य

1-माँ पीताम्बरा पीठ में प्रचलित आध्यात्मिक संचार के साधनों की पहचान करना

2-मंत्र, तंत्र एवं ध्यान की प्रक्रिया एवं प्रभावों का विश्लेषण करना

3-पीठ से जुड़े साधकों की साधना-पद्धति, आस्था एवं अनुभवों का अध्ययन करना

शोध विधि

यह शोध गुणात्मक और मात्रात्मकदोनों विधियों का मिश्रण होने के कारण सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

डेटा संग्रह के स्रोत

(i) प्राथमिक स्रोत

माँ पीताम्बरा पीठ के साधकों, पुजारियों, तांत्रिकों और साधना में लगे भक्तों के साथ संवाद और प्रश्नावली।

(ii) द्वितीयक स्रोत

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

माँ पीताम्बरा पीठ से संबंधित पुरानी ग्रंथावली, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें, शोध पत्र, लेख एवं अभिलेख।

डेटा संग्रह के उपकरण

प्रश्नावली में बंद एवं कुछ खुले प्रश्न शामिल हैं, जो साधकों की साधना, विश्वास, अनुभव और प्रभाव के बारे में जानकारी देते हैं।

नमूना चयन

नमूना आकार 500 साधकों को चुना गया है।

नमूना चयन पद्धति

उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन पद्धति के माध्यम से वे साधक हैं जो नियमित रूप से माँ पीताम्बरा पीठ में आध्यात्मिक साधना करते हैं।

विश्लेषण

प्रश्न 1: क्या आप माँ पीताम्बरा पीठ से नियमित रूप से जुड़े हुए हैं?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	410	82%
नहीं	90	18%

विश्लेषण: उत्तरदाताओं में से अधिकांश (82%) पीठ से नियमित रूप से जुड़े हुए हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि इनका अनुभव और दृष्टिकोण प्रामाणिक है।

प्रश्न 2: आपकी साधना किस रूप में होती है? (मंत्र, तंत्र, ध्यान, अन्य)

साधना प्रकार	उत्तरदाता	प्रतिशत
मंत्र	225	45%

साधना प्रकार	उत्तरदाता	प्रतिशत
तंत्र	100	20%
ध्यान	125	25%
अन्य	50	10%

विश्लेषण :सबसे अधिक साधक मंत्रजप को प्राथमिकता देते हैं। ध्यान और तंत्र का अनुपात भी उल्लेखनीय है।

प्रश्न 3: क्या आप नियमित रूप से मंत्रों का जाप करते हैं?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	390	78%
नहीं	110	22%

विश्लेषण :अधिकांश उत्तरदाता मंत्रजप को अपनी साधना का नियमित भाग मानते हैं।

प्रश्न 4: क्या आपने कभी तांत्रिक अनुष्ठान में भाग लिया है?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	240	48%
नहीं	260	52%

विश्लेषण :लगभग आधे उत्तरदाता तांत्रिक अनुष्ठानों में भाग ले चुके हैं, जो पीठ की तांत्रिक परंपरा की जीवंतता को दर्शाता है।

प्रश्न 5: क्या ध्यान आपके लिए मानसिक शांति का माध्यम है?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	435	87%
नहीं	65	13%

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

विश्लेषण :ध्यान को मानसिक शांति से जोड़ने वाले उत्तरदाताओं की संख्या अत्यधिक है, जो ध्यान की प्रभावशीलता दर्शाती है।

प्रश्न 6: इन साधनों के प्रयोग से आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया है? (वर्णनात्मक उत्तर(

परिवर्तन की प्रकृति	आवृत्ति)n=500)
मानसिक शांति और एकाग्रता	125
जीवन में सकारात्मक सोच	225
क्रोध और चिंता में कमी	50
निर्णय क्षमता में सुधार	60
पारिवारिक जीवन में समरसता	40

विश्लेषण :उत्तरदाता इन साधनों को जीवन में संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य और संबंधों की उन्नति से जोड़ते हैं।

प्रश्न 7: मंत्र, तंत्र और ध्यान में से सबसे प्रभावी कौनसा माध्यम है-?

माध्यम	उत्तरदाता (मुख्य चयन)	प्रतिशत
मंत्र	210	42%
तंत्र	90	18%
ध्यान	200	40%

विश्लेषण :मंत्र और ध्यान को लगभग समान रूप से प्रभावी माना गया है; तंत्र अपेक्षाकृत कम उत्तरदाताओं के लिए मुख्य साधन है।

प्रश्न 8: क्या इन साधनों का प्रयोग आपके पारिवारिकसामाजिक जीवन में प्रभाव डालता है/?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	380	76%
नहीं	120	24%

विश्लेषण :यह तथ्य स्पष्ट करता है कि आध्यात्मिक साधना का प्रभाव केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी सकारात्मक होता है।

प्रश्न 9: क्या आप मानते हैं कि यह संचार मानव कल्याण की दिशा में सहायक है?

विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	460	92%
नहीं	40	8%

विश्लेषण :प्रायः सभी उत्तरदाता यह मानते हैं कि मंत्र, तंत्र और ध्यान जैसे माध्यम मानव कल्याण में सहायक हैं।

संक्षिप्त निष्कर्ष

1. मंत्र एवं ध्यान को उत्तरदाताओं ने सबसे अधिक प्रभावशाली साधन माना है।
2. तांत्रिक साधना का अनुभव लगभग आधे प्रतिभागियों को है, जो पीठ की परंपरा से गहराई से जुड़े हैं।
3. साधना से मानसिक शांति, भावनात्मक स्थिरता, और जीवन दृष्टिकोण में सुधार देखा गया।
4. 76% उत्तरदाताओं के अनुसार इन साधनों का प्रभाव पारिवारिक व सामाजिक जीवन पर भी पड़ता है।
5. कुल 92% प्रतिभागी मानते हैं कि यह आध्यात्मिक संचार मानव कल्याण के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

अंक-3, खण्ड-2, अप्रैल - जून 2025 E-ISSN : 2584-2900

माँ पीताम्बरा पीठ में मंत्र, तंत्र और ध्यान के माध्यम से जो आध्यात्मिक संचार स्थापित होता है, वह न केवल व्यक्ति के आत्मिक उत्थान में सहायक होता है, बल्कि सामाजिक और मानसिक कल्याण के लिए भी प्रेरणास्रोत बनता है। यह पीठ एक जीवंत प्रयोगशाला है जहाँ चेतना, ऊर्जा और संवाद एक त्रिवेणी के रूप में बहते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, ओ) .पी.2005). *भारतीय तांत्रिक परंपरा*. वाराणसीचौखम्भा प्रकाशन। :
2. पांडेय, डी) .2012). *मंत्र विज्ञान और साधना पद्धति*. दिल्लीगोविंद प्रकाशन। :
3. शर्मा, सतीश) .2018). *ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य*. भोपालमानस पब्लिकेशन। :
4. Sen, S.K. (1999). *Tantra in Indian Spirituality*. New Delhi: Motilal Banarsidass.
5. Personal Interviews conducted with regular sadhakas at MaaPitambaraPeeth, Datia (2024).
6. आधिकारिक वेबसाइट: www.pitambara.org
7. श्री स्वामी जी महाराज की साधना डायरी ।(संरक्षित पांडुलिपि)
8. Jain, R. (2015). *Silence as a Spiritual Communication*. Mumbai: Inner Voice Publications.
9. Yogi, M. (2001). *Mantra, Tantra and Meditation*. Rishikesh: Himalayan Press।
10. स्थानीय मंदिर समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तिका:*पीताम्बरा साधना रहस्य*।